मासिक पशुपालन निर्देशिका

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

अप्रैल, 2023 क्रमांक 04

नए पशु खरीदने से पहले जरूर करवाएं ये 3 टेस्ट

नए पशु खरीदने से पहले पशु की नस्ल और दूध के गुणों के अलावा पशुपालक को विभिन्न बीमारियों से बचाव हेतु अपने पशुओं में कुछ टेस्ट जरूर करवानी चाहिए । मुख्यत: तीन बीमारियों टीबी रोग, जेडी रोग एवं ब्रूसेलोसिस या संक्रामक गर्भपात के टेस्ट कोई भी नया पशु खरीदने से पहले हमें करवाने चाहिए।

टीबी रोग पशुओं से इंसानों में फैल सकता है व पशुओं में इसका इलाज परामर्शीय नहीं है। इसलिए पशुपालक अपने खुद के बचाव व आर्थिक हानि से बचने के लिए, नए पशु खरीदने से पहले, सभी पशुओं में टीबी जरूर टेस्ट करवाएं। टीबी रोग के लिए पशुओं में ट्यूबरक्लीन टेस्ट किया जाता है, जिसमें पशुओं की चमड़ी में टीका लगाकर इस रोग का पता लगाया जा सकता है।

जेडी रोग भी टीबी रोग की तरह जीवाणु माइकोबैक्टेरियम से होती है। इस रोग में पशु निरंतर दस्त करता है। कुछ लोग इसे आंतड़ियों की टीबी भी बोल देते हैं। पशुओं में इस रोग का टेस्ट भी टीबी के टेस्ट जैसा ही होता है।

ब्रूसेलोसिस या संक्रामक गर्भपात भी एक प्रमुख पशु जन्य रोग है, जिसमें पशुओं में अंतिम तिमाही में गर्भपात की समस्या देखने को मिलती है। पशुओं में इस रोग को अबॉर्शन स्टॉर्म यानी गर्भपात का तूफान भी बोला जाता है। इस रोग की जांच पशु के खून (सीरम) के नमूने से संभव है।

इन सभी रोगों की जॉच हेतु पशुपालक लुवास विश्विद्यालय एवं इनकी लैब में संपर्क कर सकते है।

डॉ० राजेश खुराना

विभागाध्यक्ष, पशु महामारी एवं जन स्वास्थ्य विभाग, लुवास

अप्रैल मास के पशुपालन सम्बन्धी कार्य

- नई तुड़ी से होने वाले पेट बंधे से बचाव करें |
- शुरुवात में नई तुड़ी, पशु को कम खिलाएं |
- तुड़ी में मिट्टी न हो, इसके बचाव हेतु तुड़ी छान कर और भिगो कर दें |
- पेट बंधे से बचाव हेतु नई एवं पुरानी तुड़ी मिलाकर दें |
- साथ में सेंधा नमक, हींग, हरड, मोटी सौफ इत्यादि दें |
- गर्मी से बचाव हेतु पशुओं को खुले के बजाय शेड में बांधे, सीधी हवा / लू न लगें |
- गर्मी से दूध घटने से बचाव हेतु साफ़ पानी की उपलबध्ता 24 घंटे बनाएं रखे |

अप्रैल में हरे चारे की किल्लत का समाधान: अजोला चारा

1. छायादार जगह में एक गड्ढा 2.5 ×1.5 x 0.2 मीटर गहरा बनाएं और एक पॉलीथीन शीट बिछा दें | इसमें 10 सेमी (आधा) पानी का स्तर बना रहे|
2. क्यारी में 15 किलो छानी हुई मिट्टी फैला दें और लगभग 5 किलो गोबर को पानी में मिला दें और 500g अजोला कल्चर डाल दें |
3. अज़ोला का 07 दिनों के भीतर 10 किलो तक उत्पादन हो सकता है| उसके बाद, हर दिन 1.5 किलो अजोला प्रयोग करने हेतु निकाल सकते है|प्रयोग से पहले अज़ोला जरुर धो लें |
4. अजोला कल्चर एवं अधिक जानकारी के लिए नजदीकी पशु विज्ञान केंद्र / विस्तार शिक्षा वैज्ञानिक से संपर्क करें |

संपादक : डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ सुजोय खन्ना, डॉ ज्योति शुन्ठवाल